सम्पादकीय

देश - विदेश

राष्ट्रीय

संभल की दुर्भाग्यपूर्ण घटना से उपजे जटिल सवाल

यह दुर्भाग्यपूर्ण एवं त्रासद है कि उत्तर प्रदेश के संभल में एक बार फिर एक सम्प्रदाय विशेष के लोगों ने जो हिंसा, नफरत एवं द्वेष को हथियार बनाकर अशांति फैलायी, वह भारत की एकता, अखण्डता एवं भाईचारे की संस्कृति को क्षति पहुंचाने का माध्यम बनी है। स्थानीय अदालत के आदेश पर एक मस्जिद के सर्वे के दौरान हिंसा एवं उन्माद का भड़क उठना और इसके चलते तीन लोगों की जान चले जाना, चुनौतीपूर्ण, विडम्बनापूर्ण एवं शर्मनाक है। इस घटना में कई अन्य लोग घायल भी हुए, जिनमें 30 से अधिक पुलिसकर्मी भी हैं। इस हिंसा को टाला जा सकता था यदि अदालत के आदेश पर हो रहे सर्वेक्षण का हिंसक विरोध नहीं किया जाता। ध्यान रहे कि जब ऐसा होता है तो बैर बढ़ने के साथ देश की छवि पर भी बुरा असर पड़ता है। नि:संदेह इस सम्प्रदाय विशेष को भी यह समझने की आवश्यकता है कि जब देश कई चुनौतियों से दो-चार है, तब राष्ट्रीय एकता एवं सद्भाव को बल देना सबकी पहली और साझी प्राथमिकता बननी चाहिए। एक उन्मादी, विभाजित और वैमनस्यग्रस्त समाज न तो अपना भला कर सकता है और न ही देश को आगे ले जा सकता है। समय आ गया है कि उन मूल कारणों पर विचार किया जाए, जिनके चलते साम्प्रदायिक तनाव, नफरत एवं द्वेष बढ़ाने वाली घटनाएं थम नहीं रही हैं।

संभल की स्थानीय अदालत ने उस याचिका पर जामा मस्जिद के सर्वेक्षण का आदेश दिया था, जिसमें दावा किया गया था कि मुगल बादशाह बाबर ने इस मस्जिद का निर्माण एक मंदिर के स्थान पर किया था। स्थानीय अदालत के आदेश पर इसी मंगलवार को जब प्रारंभिक सर्वे किया गया था तब भी इलाके में तनाव फैला था, लेकिन उसे दूर कर लिया गया था। समझना कठिन है कि गत दिवस सर्वे के दौरान ऐसे प्रयास क्यों नहीं किए गए जिससे किसी तरह की अव्यवस्था और अशांति न फैलने पाए। रविवार को सर्वे के दौरान जिस तरह पुलिस पर पथराव किया गया और वाहनों में तोड़फोड़ करने के साथ उन्हें आग के हवाले किया गया, उससे लगता है कि कुछ उन्मादी तत्वों ने उपद्रव की तैयारी कर रखी थी। ऐसी घटनाएं सामाजिक तानेबाने को क्षति पहुंचाने के साथ कानून एवं व्यवस्था के समक्ष चुनौती भी खड़ी करती हैं। यह चिंता की बात है कि यह एक चलन सा बनता जा रहा है कि जब सार्वजनिक स्थलों पर कोई धार्मिक आयोजन होता है, किसी अदालती आदेश पर जांच कार्य होता है तो प्राय: पहले किसी बात को लेकर विवाद होता है और फिर हिंसा शुरू हो जाती है। कई बार तो यह हिंसा बड़े पैमाने पर और किसी सुनियोजित साजिश के तहत होती दिखती है। उत्तर प्रदेश के संभल में हुई भीषण हिंसा यही संकेत करती है कि उसे लेकर पूरी तैयारी की गई थी। संभल की ताजा घटनाओं के मूल में भड़काऊ नारे एवं संकीर्ण धार्मिकता के मनसूंबे सामने आये हैं। इस तरह की घटनाओं का बार-बार होना अच्छा नहीं है, मंदिर-मस्जिद के एक और मामले ने तनाव की स्थिति उत्पन्न करके शांति एवं सौहार्द को खण्डित किया। यदि मस्जिद पक्ष का यह मानना है कि जामा मस्जिद के सर्वे का आदेश सही नहीं तो उसे ऊपरी अदालत का दरवाजा खटखटाना चाहिए था। अदालत के आदेश की अवहेलना करने के लिए हिंसा का सहारा लेने का कहीं कोई औचित्य नहीं और तब तो बिल्कुल भी नहीं जब निचली अदालत के किसी फैसले के खिलाफ ऊंची अदालतों में जाने का रास्ता खुला हो। यह भी देखा जाना चाहिए कि क्या कुछ राजनीतिक दल एवं सम्प्रदाय विशेष के लोग किसी भी बहाने भड़कने और हिंसा करने के लिए तैयार बैठे रहते हैं? वास्तव में जैसे यह एक सवाल है कि क्या भारतीय संस्कृति के अस्तित्व एवं अस्मिता से जुड़े इन धार्मिक स्थलों के नाम पर पथराव, तोड़फो? और आगजनी करना जरूरी समझ लिया गया हैं? इन प्रश्नों पर संकीर्ण धार्मिकता से परे होकर गंभीरता के साथ विचार होना चाहिए। इसी तरह पुलिस प्रशासन को भी यह देखना होगा कि वैमनस्य बढ़ाने वाली घटनाएं क्यों बढ़ती चली जा रही हैं? यह सही है कि 1991 का पूजा स्थल अधिनियम किसी धार्मिक स्थल में बदलाव का निषेध करता है, लेकिन इसकी भी अनदेखी नहीं की जा सकती कि यह अधिनियम ऐसे किसी स्थल के सर्वेक्षण की अनुमति भी प्रदान करता है और इसी कारण वाराणसी में ज्ञानवापी परिसर का सर्वेक्षण हुआ और धार में भोजशाला परिसर का भी। मथुरा में ईदगाह परिसर के सर्वेक्षण का मामला सुप्रीम कोर्ट के समक्ष विचाराधीन है। मंदिर-मस्जिद के विवाद नए नहीं हैं।

अंतर्राष्ट्रीय

चीन है, चीन पर भरोसा करने में समय तो लगेगा

भारत और चीन के बीच ईस्टर्न लद्दाख में एलएसी पर देपसांग और डेमचॉक में गतिरोध खत्म कर पेट्रोलिंग शुरू करने का समझौता हुए एक महीना हो गया। समझौते के तहत ही यहां काम हो रहा है। दोनों जगह डिसइंगेजमेंट के बाद पेट्रोलिंग शुरू हो चुकी है। अभी बस यह शुरुआत है। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कहा है कि अगला चरण डीएस्केलेशन का होगा यानी दोनों देशों की सेनाएं यहां से सैनिकों और सैन्य साजोसामान को पीछे हटाएंगी और संख्या कम करेंगी। हालांकि इसमें काफी समय लग सकता है, कई साल का समय। अभी भी सबसे बड़ा फैक्टर दोनों देशों की सेनाओं के बीच विश्वास बहाली का है। इस दिशा में कदम बढ़े हैं, लेकिन वक्त तो लगेगा ही। देपसांग और डेमचॉक में गतिरोध खत्म करने को लेकर सहमति 21 अक्टूबर को बनी। इसी दिन विदेश मंत्रालय की तरफ से इसका ऐलान भी किया गया। अगले दिन भारतीय सेना प्रमुख उपेंद्र द्विवेदी ने कहा कि हम भरोसे को बहाल करने और एक-दूसरे को आश्वस्त करने की कोशिश कर रहे हैं। 23 अक्टूबर से इन दोनों पॉइंट्स पर दोनों सेनाओं ने टेंट और टेंपररी स्ट्रक्चर हटाना शुरू कर दिया था।

31 अक्टूबर को फाइनल वेरिफिकेशन के लिए जॉइंट पेट्रोलिंग की गई। अप्रैल 2020 के बाद यह पहली पेट्रोलिंग थी। इसके बाद नवंबर में दोनों देशों ने इंडिपेंडेंट पेट्रोलिंग शुरू की। अब डेमचॉक और देपसांग के एक-एक पॉइंट पर दोनों सेनाएं अपनी-अपनी पेट्रोलिंग कर चुकी हैं। देपसांग के चार पॉइंट और डेमचॉक के एक पॉइंट पर भी पेट्रोलिंग होगी। देपसांग में कुल 5 पॉइंट हैं और डेमचॉक में 2 पॉइंट, जहां भारतीय सेना अप्रैल 2020 से पहले पेट्रोलिंग करती आई है। मिलिट्री सूत्रों का कहना है कि इन सब पॉइंट्स पर ही पेट्रोलिंग करने में करीब एक महीने का वक्त लग जाएगा। इसके बाद इन सब जगह पहले की तरह ही फ्रीक्वेंसी में पेट्रोलिंग होनी है। जब लगातार पहले की तरह पेट्रोलिंग करते रहेंगे, तब जाकर एक-दूसरे पर विश्वास बहाल होगा कि स्थिति सामान्य हो रही है।

जब देपसांग और डेमचॉक में भरोसा हो जाएगा कि सब ठीक है, उसके बाद बफर जोन पर पेट्रोलिंग शुरू करने पर बात होगी। इसमें भी काफी वक्त लगने की संभावना है। ईस्टर्न लद्दाख में पैंगोग एरिया, गलवान के पीपी-14, गोगरा और हॉट स्प्रिंग एरिया में जब डिसइंगेजमेंट हुआ था, तब पेट्रोलिंग शुरू नहीं की गई थी। वहां बफर जोन बना दिए गए थे, यानी चीन और भारत में से किसी के सैनिक पेट्रोलिंग नहीं कर सकते। बफर जोन पर पेट्रोलिंग को लेकर बातचीत शुरू होने और इसमें सहमति बनने तक में काफी वक्त लग सकता है।

सर्वस्व

धर्म-आध्यात्म

सूर्य ही हमारे शरीर में मन, बुद्धि, चित्त अहंकार आदि के रूप में व्याप्त हैं

सभी साधनाओं के साध्य हैं सूर्यदेव

सूर्य साक्षात् परमात्मस्वरूप हैं। शास्त्र एक स्वर से इनकी वंदना, अर्चना (पूजा-पाठ)को मानव का परम कर्त्तव्य बतलाते हैं। सूर्य से ही सभी ऋतुएँ होती हैं। सूर्य को ही कालचक्र का प्रणेता और प्रणवरूप माना गया है। सूर्य से ही सभी जीव उत्पन्न होते हैं। सभी योनियों में जो जीव हैं उनका आविर्भाव, प्रेरणा - पोषण आदि सब सूर्य से ही होते हैं और अंत में सभी जीव उन्हीं में विलीन हो जाते हैं। अत: उनकी उपासना करनी चाहिए।

भगवान सूर्य का गायत्री मंत्र यह है-

''ॐ भास्कराय विद्महे दिवाकराय
धीमह्दी तन्मः सूर्यः प्रचोदयात,''

सूर्य का एक नाम आदित्य भी है। आदित्य से अग्नि, जल, वायु, आकाश तथा सूर्य की उत्पत्ति हुई है। देवताओं की उत्पत्ति भी सूर्य से ही मानी गई है। इस समस्त ब्रह्मांड मंडल को अकेले सूर्य ही तपाते हैं, अत: सूर्य आदित्य-ब्रह्म हैं। सूर्य ही हमारे शरीर में मन, बुद्धि, चित्त अहंकार आदि के रूप में व्याप्त हैं। हमारी पांचों ज्ञानेंद्रियों और पांचों कार्मेंद्रियों को भी वे ही प्रभावित करने वाले हैं। इस प्रकार भगवान सूर्य को सभी दृष्टियों से बहुत महत्व प्राप्त है।

सूर्य को भगवान कहते हैं। वास्तव में वे इस सौरमंडल में भगवतस्वरूप हैं, सम्पूर्ण ब्रह्मांड में जो कार्य भगवान करते हैं, इस सौरमंडल में सूर्य की भी वही स्थिति है और तत्सम कृति है। इसलिए वेद ने स्वयं भगवान की सूर्य से उपमा की है-

''ब्रह्म सूर्यसम ज्योतिः।''

(यजुर्वेद से)

''भवा नो अवडिस्वर्ण ज्योति''

(ऋगवेद से)

वेद में आए सारे देववाची नाम अंत में परमेश्वर की स्तुति करते हैं, क्योंकि प्रत्येक देव के गुण की अंतिम पराकाष्ठा उसी में सार्थक होती है। इसलिए किसी भी नाम से स्तुति की जाए, वास्तव में वह परमेश्वर की ही स्तुति होती है-

''तं गाथया पुराणया पुनान मम्यनूषता।
उतो कृपन्त धीयतो देवानां नाम विभ्रती''

(ऋगवेद से)

इसी प्रकार भगवान के बाद सबसे अधिक नाम सूर्य के हैं। विवास्वान, पूषा, त्वस्टा, धात्र, विधाता, सविता, मित्र, वरुण, आदित्य, शक्र, उसक्रय, विष्णु, भग इत्यादि नाम अलग-अलग देवों के होते हुए सूर्य के वाचक भी हैं। इसलिए इन नामों से इन देवताओं के वर्णन के साथ सूर्य की स्तुति भी होती है। जब भग या सविता को भग का प्रसंविता कहते है, तो उसका अर्थ यही है कि सूर्य ही स्वयं भगवान हैं--

''भग एवं भगवाँ अस्तु देव.......।''
''....स नो भगव पुरएता भवेह।।''

(अथर्ववेद से)

''सुखति सविता भगः।''

(ऋग्वेद से)

क्योंकि जब तक अपने पास कोई वस्तु न हो, वह दूसरे को कैसे दी जा सकती है।

सूर्य के उदय के साथ ही जगत के कार्य प्रारंभ होते हैं। सूर्य ही दिन-रात और ऋतु-चक्र के नियामक हैं। सूर्य की ऊष्मा के बिना वनस्पतियां पक नहीं सकतीं,अन्न उत्पन्न नहीं हो सकता और परिणामत: प्राणधारी प्राण को धारण नहीं कर सकते। इस प्रकार सूर्य सर्वशक्तिमान प्रभु के साक्षात् स्वरूप के सफर पर इस ब्रह्मांड में विराजमान हैं।

आध्यात्मिक लेख

ज्ञानी और अज्ञानी दोनों ही ब्रह्म की बात करते हैं। एक स्वयं में प्रतिष्ठित है, इसलिए वह स्वयं को ब्रह्म से विभेद कर ही नहीं पाता है। कृष्ण के बिना राधा अधूरी हैं और मीरा भी। राधा और कृष्ण, मीरा और उसका कान्हा, इन दोनों में भेद नहीं है और इसलिए दोनों ही स्वयं को कृष्ण से अलग कर ही नहीं पाती।

वेदांत क्या कहता है 'ब्रह्मा' के विषय में

अहं ब्रह्मास्मि' की मनोरम करता है वेदांत दर्शन। वेदांत जीव एवं ब्रह्मा में भेददृष्टि नहीं रखता। यह दोनों की अभेदता एवं अद्वैतता की व्याख्या करता है। यह ज्ञान की पराकाष्ठा है, जिसे केवल अनुभव के आधार पर ही बोध किया जा सकता है। इसका शब्दार्थ तो कोई भी पढ़कर जान सकता है और इस पर शब्दों का इन्द्रजाल बुन सकता है, जिसे सुनकर ऐसा लगाता है कि वक्ता ने वेदांत पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लिया है। पूर्ण अधिकार की प्रतीति होती है दो रूपों में-एक ज्ञानी के साथ और दूसरी अहंकारी के साथ, ज्ञानी एवं अहंकारी दोनों ही 'मैं ब्रह्मा हूँ' की व्याख्या करते हैं, लेकिन ज्ञानी में अहंकार शून्य होता है और वह बोध के आधार पर व्याख्या करता है। जबकि, अहंकारी शाब्दिक अर्थ बनाकर तथा स्वयं को ब्रह्म कहकर अति तुष्ट होता है।

ज्ञानी एवं अहंकारी, दोनों ही वेदांत की बात करते हैं। इसकी बात वही कर सकता है, जिसे बोध हो गया हो। ब्रह्म ही सृष्टि के कण-कण में विराजमान-विद्यमान हैं- जीव में भी वही है और प्रस्तरखंड में भी वही नजर आता है। 'जीव' में जो ब्रह्म है वह जागृत है और प्रस्तरखंड में विद्यमान ब्रह्म सुषुप्त है। बात केवल अवस्था-भेद की है, परंतु है एक ही, सुप्त ब्रह्म जाग जाए तो वह उसी में लय हो सकता है। यह बोध का विषय है। ज्ञानी समाधि के पार पहुंचकर इस अद्वैत का बोध करता है कि मेरे और ब्रह्म के बीच कोई भेद नहीं है- जो मैं हूँ, वही ब्रह्मा है और जो ब्रह्मा है, वही

मैं हूँ, तत्वत: हम दोनों एक हैं। वह इस तत्व को जानता है और अनुभव करता है।

ज्ञानी और अज्ञानी दोनों ही ब्रह्म की बात करते हैं। एक स्वयं में प्रतिष्ठित है, इसलिए वह स्वयं को ब्रह्म से विभेद कर ही नहीं पाता है। कृष्ण के बिना राधा अधूरी हैं और मीरा भी। राधा और कृष्ण, मीरा और उसका कान्हा, इन दोनों में भेद नहीं है और इसलिए दोनों ही स्वयं को कृष्ण से अलग कर ही नहीं पाती। वे कैसे कह सकते हैं कि दोनों अलग-अलग हैं। यहाँ तो अद्वैत है, अद्वैत अर्थात् दो का अस्तित्व ही नहीं है। स्वामी रामतीर्थ भी अद्वैत के पुरोधा थे। एक बार हिमालय में विचरण कर रहे थे, उन्होंने एक अद्भुत दृश्य देखा। उन्होंने देखा कि एक नरभक्षी शेर एक योगी के शरीर को फाड़कर उसका शोणित पान कर रहा था। योगी भी अद्भुत था। वह मौत के मुँह में जोर-जोर से ठहाका लगाकर हँसते हुए कह रहा था कि शेररूपी ब्रह्म मानवरूपी ब्रह्म का भक्षण कर रहा है। रामतीर्थ ने कहा वह योगी श्रेष्ठ वेदांती था। उसे तत्व का ज्ञान था। वह ज्ञानी था और इसलिए मौत के समय भी हँसते हुए उस तत्व का बोध कर रहा था।

व्यावहारिक वेदांत है कि व्यक्ति अपने स्वभाव के अनुरूप बरताव करे। स्वार्थ त्यागकर नि:स्वार्थ भाव से लोक-कल्याणकारी वृत्ति को अपनाए। वह स्वयं को अनुभव करे और अपनी क्षमता को चिन्हित एवं क्रियान्वित करे- शब्दों से नही, उसके मर्म को समझना चाहिए, बोलकर नहीं, व्यवहार में उतारकर उसका अनुपालन करना चाहिए। अत: जीव की सेवा शिव के रूप में मानकर करनी चाहिए। इससे अहंकार गलता है। अहंकार के गलने से ज्ञान पैदा होता है और ज्ञान से उस ब्रह्म की, जो सबके भीतर छिपा हुआ है, की झाँकी प्राप्त की जा सकती है, यही वेदांत का सार है।

वेदांत अनुभव का विषय है, न कि शब्दों का मोहक इंद्रजाल। शब्द अनुभव का मूर्तरूप है, अत: शब्द को भी ब्रह्म ही माना गया है,- परंतु शब्द के अर्थ में गहरा मर्म छिपा होना चाहिए और उस मर्म का वास्तविक अनुभव होना चाहिए। ऐसा शब्द ऊर्जा का असीम भंडार होता है। जहां भी जाता है या प्रवाहित होता है, अपने प्रभाव से प्रभावित किए बिना नहीं रहता। अद्वैत वेदांत के सूत्रों में यही रहस्य समाया हुआ है। जिज्ञासु इन सूत्रों को खोलता है, ज्ञानी इनमें डुबकी लगाता है। और इसी में जीता है। श्रोता विमुग्ध होता है और उसकी प्रशंसा करता है। उसकी प्रशंसा से मुग्ध और प्रसन्न वक्ता स्वयं को प्रकांड वेदांती मानता है।